

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 20: पूरु का वंश

2 October 2026



श्री हरि के एक अंश से उत्पन्न, बालक भरत वन में निर्भय क्रीड़ा करता है, अपने ही बल से सिंहों को बाँधता हुआ — वह बालक जिसके नाम पर यही भूमि, भारत-वर्ष, कहलाई।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह बीसवाँ अध्याय पूरु के वंश का अनुसरण करता है, ययाति के सबसे छोटे एवं सबसे योग्य पुत्र — वही वंश जिसमें स्वयं राजा परीक्षित उत्पन्न हुए। शुकदेव परीक्षित को पूरु से लेकर दुष्मन्त तक की पीढ़ियों का वर्णन सुनाते हैं, और तदुपरान्त वन में दुष्मन्त की ऋषि-कन्या शकुन्तला से हुई भेंट तथा उनके पुत्र — श्री हरि के एक अंश से जन्मे एवं जिनके नाम पर यह धरा सदा के लिए पुकारी गई — के जन्म का वृत्तान्त कहते हैं। वे भरत की चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में असीम महिमा — उनके एक सौ तैंतीस अश्वमेध यज्ञ, उनकी विजयें, और उनका अन्तिम बोध कि समस्त प्रभुत्व असत्य है — का वर्णन करते हैं, और यह कथा कहकर समाप्त करते हैं कि किस प्रकार मरुतों ने ऋषि भरद्वाज को सम्राट् को उनका वंश आगे बढ़ाने हेतु दिया। यह अध्याय वंश एवं नियति, इस सत्य कि पुत्र पिता का होता है, भरत की अद्वितीय महिमा, और सबसे बड़ी शक्ति से भी निवृत्त होने के ज्ञान के विषय में है।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 20 (विंश अध्याय)
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: चन्द्रवंश में पूरु का वंश; ऋषि कण्व का आश्रम; सम्राट् भरत का राज्य
- अध्याय शीर्षक: पूरु का वंश
- केन्द्रीय विषय: पूरु की वंशावली, दुष्मन्त एवं शकुन्तला का मिलन, सम्राट् भरत का जन्म एवं महिमा, और ऋषि भरद्वाज का आगमन
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 1-39
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पूरु का वंश

शुकदेव ने पूरु के वंश का विस्तृत वर्णन आरम्भ किया, जिसमें स्वयं परीक्षित उत्पन्न हुए एवं जिसमें अनेक राजर्षि एवं ब्राह्मण प्रकट हुए। पूरु से जनमेजय हुए, फिर प्राचीन्वान्, प्रवीर, मनुस्यु, चारुपाद, सुद्यु, बहुगव, संयाति, अहंयाति, और रौद्राश्व। रौद्राश्व के अप्सरा घृताची से दस पुत्र हुए; सबसे बड़े ऋतेयु से रन्तिभार हुए, और उनके वंश से अप्रतिरथ, जिनके पुत्र कण्व थे। एक अन्य शाखा, सुमति एवं रैभ्य के माध्यम से, दुष्मन्त तक पहुँची।

दुष्मन्त का शकुन्तला से मिलन

एक दिन आखेट करते हुए, राजा दुष्मन्त ऋषि कण्व के आश्रम आए और वहाँ अनुपम सौन्दर्य की एक कन्या को देखा, लक्ष्मी के समान देदीप्यमान, अपने तेज से आश्रम को प्रकाशित करती हुई। तत्काल प्रेम में पड़कर, उन्होंने पूछा कि वह कौन है; और उसने उत्तर दिया कि वह विश्वामित्र की पुत्री है, मेनका द्वारा वन में त्यागी गई एवं ऋषि कण्व द्वारा पाली गई।

श्रीशकुन्तलोवाच

विश्वामित्रात्मजैवाहं त्यक्ता मेनकया वने ।

वेदैतद् भगवान् कण्वो वीर किं करवाम ते ॥ १३ ॥

śrī-śakuntalovāca viśvāmitrātmaivaivāhaṁ tyaktā menakayā vane vedaitad bhagavān kaṇvo vīra kim karavāma te

अर्थ: शकुन्तला ने कहा: मैं विश्वामित्र की पुत्री हूँ, मेनका द्वारा वन में त्यागी गई; पूज्य ऋषि कण्व यह जानते हैं। हे वीर, हम आपके लिए क्या करें? (नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 13)

धर्म-संहिता जानते हुए, एवं शकुन्तला की मौन सहमति से, दुष्मन्त ने उससे गान्धर्व विधि से विवाह किया, और समय पाकर उसने एक पुत्र को जन्म दिया।



वन में आखेट करते हुए, राजा दुष्मन्त ऋषि कण्व के आश्रम आते हैं और विश्वामित्र की पुत्री, देदीप्यमान शकुन्तला को देखते हैं — और, धर्म-संहिता जानते हुए, उससे गान्धर्व विधि से विवाह करते हैं (श्लोक 8-16)।

भरत का जन्म

ऋषि कण्व ने वन में राजकुमार के जन्म-संस्कार किए; और शिशु रहते हुए भी बालक अपने ही श्रेष्ठ बल से सिंहों को बाँधकर क्रीड़ा करता।

कण्वः कुमारस्य वने चक्रे समुचिताः क्रियाः ।

बद्ध्वा मृगेन्द्रंतरसा क्रीडति स्म स बालकः ॥ १८ ॥

kaṇvaḥ kumārasya vane cakre samucitāḥ kriyāḥ baddhvā mṛgendram tarasā krīḍati sma sa bālakaḥ

अर्थ: ऋषि कण्व ने वन में राजकुमार के उचित संस्कार किए; और बालक अपने ही बल से सिंहों को बाँधकर क्रीड़ा करता। (नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 18)

आकाशवाणी

जब शकुन्तला उस बालक को — श्री हरि के एक सूक्ष्म अंश से उत्पन्न — दुष्मन्त के पास लाई, राजा ने पहले उसे एवं बालक को, दोनों निर्दोष होने पर भी, स्वीकार नहीं किया। तब आकाश से एक वाणी बोली, ताकि समस्त प्राणी सुन सकें।

माता भस्त्रा पितुः पुत्रो येन जातः स एव सः ।

भरस्व पुत्रं दुष्मन्त मावमंस्थाः शकुन्तलाम् ॥ २१ ॥

mātā bhastrā pituḥ putro yena jātaḥ sa eva saḥ bharasva putraṁ duṣmanta māvamaṁsthāḥ śakuntalām

अर्थ: माता तो केवल एक पात्र है; पुत्र पिता का होता है, और उसी पिता के समान है जिससे वह उत्पन्न हुआ। हे दुष्मन्त, अपने पुत्र का पालन करो, और शकुन्तला का तिरस्कार मत करो। (नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 21)

चूँकि वाणी ने उन्हें बालक का “पालन” (भर) करने का आदेश दिया, बालक का नाम भरत रखा गया। आकाशवाणी की आज्ञा स्वीकार करके, दुष्मन्त ने अपने पुत्र को ग्रहण किया एवं शकुन्तला का सम्मान किया।



जब दुष्मन्त शकुन्तला एवं उनके पुत्र को स्वीकार करने में हिचकते हैं, आकाश से एक वाणी घोषित करती है कि पुत्र अपने पिता का होता है और राजा को बालक का पालन करने की आज्ञा देती है — जो इस प्रकार भरत नाम पाता है (श्लोक 19-22)।

सम्राट् भरत की महिमा

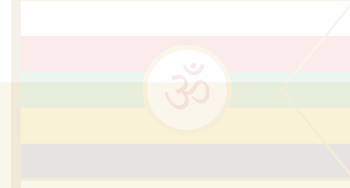
अपने पिता की मृत्यु के पश्चात्, भरत महान् कीर्ति के चक्रवर्ती सम्राट् बने, अपने दाहिने हाथ में चक्र का चिह्न एवं अपने चरणों के तलवों में कमल-कली का चिह्न धारण किए। एक भव्य राज्याभिषेक से अभिषिक्त होकर, उन्होंने गंगा के किनारे पचपन एवं यमुना के किनारे अठहत्तर अश्वमेध यज्ञ किए, ऋषि दीर्घतमा को अपना पुरोहित बनाकर, अपार धन दान करते हुए।



चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में अभिषिक्त होकर, सम्राट् भरत पवित्र गंगा एवं यमुना के किनारों पर अपने महान् अश्वमेध यज्ञ करते हैं, ब्राह्मणों को अपार धन दान करते हुए (श्लोक 24-26)।

एक सौ तैंतीस अश्वमेध यज्ञ करके, समस्त अन्य राजाओं के आश्चर्य के लिए, भरत ने न केवल भगवान् की माया को पार किया बल्कि स्वयं भगवान् श्री हरि को प्राप्त किया।

त्रयस्त्रिंशच्छतं ह्यश्वान्बद्ध्वा विस्मापयन् नृपान् ।
दौष्मन्तिरत्यगान्मायां देवानां गुरुमाययौ ॥ २७ ॥



trayas-triṁśac-chataṁ hy aśvān baddhvā vismāpayan nṛpān dauṣmantir atyagān māyāṁ devānāṁ gurum āyayau

अर्थ: एक सौ तैंतीस अश्वमेध यज्ञ करके, समस्त राजाओं के आश्चर्य के लिए, दुष्मन्त के पुत्र ने भगवान् की माया को पार किया और देवताओं के पूज्य भगवान् को प्राप्त किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 27)

न कोई पूर्व राजा, न भावी राजा, शुकदेव ने कहा, भरत की महिमा का अनुकरण कर सका, जैसे कोई हाथों से आकाश को छू नहीं सकता। उन्होंने उन अधर्मी राजाओं को कुचला जो ब्राह्मणों एवं वेदों का तिरस्कार करते थे, असुरों द्वारा पाताल ले जाई गई देवताओं की पत्नियों को पुनः प्राप्त किया, और समस्त दिशाओं पर सत्ताईस हज़ार वर्ष शासन किया।



श्री हरि के एक अंश से उत्पन्न सम्राट् भरत अद्वितीय महिमा के चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में शासन करते हैं, उनकी कीर्ति लोकपालों तक पहुँचती हुई, और पृथ्वी एवं स्वर्ग उनकी प्रजा की समस्त इच्छाएँ पूर्ण करते हुए (श्लोक 27-32)।

भरत की निवृत्ति और भरद्वाज का आगमन

फिर, अपने शासन के शिखर पर पहुँचकर, महान् सम्राट् के भीतर कुछ जागृत हुआ: उन्होंने देखा कि सिंहासन, धन-सम्पदा, अबाध शासन-शक्ति, यहाँ तक कि स्वयं अपने शरीर में बहती साँस भी — सब कुछ माया मात्र है — और चुपचाप उस संसार से मुख मोड़ लिया जिस पर वे शासन करते थे।

स संराड्लोकपालाख्यमैश्वर्यमधिराट् श्रियम् ।

चक्रं चास्खलितं प्राणान् मृषेत्युपरराम ह ॥ ३३ ॥

sa saṁrāḍ loka-pālākhyam aiśvaryam adhirāṭ śriyam cakram cāskhalitaṁ prāṇān mṛṣety upararāma ha

अर्थ: यह बोध होने पर कि उनका प्रभुत्व, लोकपालों में भी प्रसिद्ध, उनकी राजलक्ष्मी, उनका अबाध अधिकार, और उनका जीवन भी असत्य हैं, महान् सम्राट् ने संसार से निवृत्ति ले ली। (नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 33)

भरत की तीन पत्नियाँ, विदर्भराज की पुत्रियाँ, अपने पति द्वारा त्यागे जाने के भय से अपने ही पुत्रों को नष्ट कर बैठीं, क्योंकि उन्होंने कहा था कि पुत्र उनके समान नहीं हैं; अतः उनका वंश विलुप्ति के संकट में पड़ गया। जब भरत ने वायु-देवों को एक यज्ञ द्वारा प्रसन्न किया, मरुतों ने उन्हें एक पुत्र, भरद्वाज, दिया — बृहस्पति एवं ममता से उत्पन्न एवं दोनों द्वारा त्यागा गया एक बालक, जिसे मरुतों ने पाला था और अब भरत को उनका वंश आगे बढ़ाने हेतु सौंपा।

तस्यैवं वितथे वंशे तदर्थं यजतः सुतम् ।
मरुत्स्तोमेन मरुतो भरद्वाजमुपाददुः ॥ ३५ ॥

tasyaivam vitathe vamśe tad-artham yajataḥ sutam marut-stomena maruto bharadvājam upādaduḥ

अर्थ: जब भरत का वंश इस प्रकार विलुप्ति के संकट में पड़ा, तब मरुतों ने, उनके द्वारा मरुत्स्तोम यज्ञ से प्रसन्न होकर, उन्हें एक पुत्र — भरद्वाज — दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 20, श्लोक 35)



जब सम्राट् भरत का वंश विलुप्ति के संकट में पड़ता है, वायु-देव मरुत उन्हें बालक भरद्वाज प्रस्तुत करते हैं — उनके द्वारा पाला गया एवं महान् वंश को आगे बढ़ाने हेतु दिया गया (श्लोक 34-39)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रत्येक आत्मा अपने से कहीं बड़ी एक धारा में जन्म लेती है। पूरु का वंश, जिसमें स्वयं परीक्षित उत्पन्न हुए, असंख्य पीढ़ियों तक फैला है। हम प्रत्येक भगवान् द्वारा नियत एक परम्परा की एक कड़ी हैं, और हमारे जीवन एक ऐसी कथा को आगे ले जाते हैं जो हमसे बहुत पहले आरम्भ हुई (श्लोक 1-7)।
2. भगवान् अदृश्य वाणियों के माध्यम से भी सत्य को धारण करते हैं। जब दुष्मन्त हिचकते हैं, तब यह स्वर्ग से एक आकाशवाणी है जो शकुन्तला एवं बालक को प्रमाणित करती है। सत्य, अध्याय दिखाता है, का साक्षी स्वयं स्वर्ग है (श्लोक 20-22)।
3. भगवान् को समर्पित महानता भगवान् को प्राप्त करती है। भरत के द्वितीय यज्ञ खोखली महिमा के लिए नहीं; उनके द्वारा वे माया को पार करते एवं श्री हरि को प्राप्त करते हैं। शक्ति एवं धन, भगवान् को अर्पित होकर, उन तक एक मार्ग बन जाते हैं (श्लोक 27)।

4. सबसे बड़ा साम्राज्य भी अन्ततः असत्य ज्ञात होता है। भरत, सत्ताईस हज़ार वर्ष सम्पूर्ण पृथ्वी के स्वामी, अन्ततः अपने प्रभुत्व एवं अपने जीवन को असत्य मानकर निवृत्त हो जाते हैं। ज्ञानी सबसे ऊँची राजलक्ष्मी को भी हलके भाव से धारण करते हैं (श्लोक 33)।

5. भगवान् उसे सुरक्षित रखते हैं जो उनके उद्देश्य की सेवा करता है। जब भरत का वंश संकट में पड़ता है, मरुत उसे आगे बढ़ाने हेतु भरद्वाज प्रदान करते हैं। भगवान् की योजना के प्रकटीकरण हेतु जो आवश्यक है वह कभी सचमुच खोया नहीं जाता (श्लोक 34-39)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय इस भूमि में जन्मी प्रत्येक आत्मा के लिए एक विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह उस सम्राट् की बात कहता है जिसका नाम हम आज भी धारण करते हैं — भरत, वह बालक जो सिंहों से क्रीड़ा करता था और एक ऐसा सम्राट् बना कि न उससे पहले न उसके बाद कोई राजा उसकी महिमा को छू सका। फिर भी भागवत हमें उस महिमा में विश्राम नहीं करने देता। भरत का चक्र-चिह्नित हाथ, उनके एक सौ तैंतीस यज्ञ, उनकी दिशाओं की विजय एवं उनका सत्ताईस-हज़ार-वर्ष का शासन देकर, यह, एक ही शान्त श्लोक में, उन्हें यह सब त्यागते हुए दिखाता है — अपने प्रभुत्व, अपनी राजलक्ष्मी, और अपने जीवन को भी असत्य मानते, और संसार से निवृत्त होते। यहाँ सम्पूर्ण वंश की सबसे गहरी शिक्षा है: कि सबसे महान् पुरुषों में सबसे महान्, सबसे बड़े साम्राज्यों में सबसे बड़े के शिखर पर, अपनी पूर्णता पकड़े रहने में नहीं बल्कि छोड़ देने में पाई। भरत की सच्ची विजय उनकी पृथ्वी की विजय नहीं बल्कि उनकी माया की विजय एवं श्री हरि की प्राप्ति थी। जो भूमि उनका नाम धारण करती है, उनके उदाहरण के माध्यम से, केवल महानता नहीं बल्कि वह ज्ञान खोजने के लिए आमन्त्रित है जो महानता के पार उस भगवान् को देखता है जो अकेला सत्य है। और उस आकाशवाणी में जिसने एक पतिव्रता पत्नी एवं एक न्यायसंगत पुत्र को प्रमाणित किया, हमें स्मरण कराया जाता है कि सत्य कभी अन्ततः त्यागा नहीं जाता, क्योंकि स्वर्ग स्वयं उसका साक्षी खड़ा है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, सम्राट् भरत की भावना में, अपने बल एवं उपलब्धि को अपनी महिमा के बजाय भगवान् को अर्पित करें। आज आप जो भी प्राप्त करें — एक पूर्ण किया कार्य, एक निभाया कर्तव्य, एक जीती सफलता — उसे मन ही मन भगवान् को समर्पित करें, मृदुता से दोहराते हुए, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” जैसे भरत ने अपने यज्ञ अर्पित किए एवं इस प्रकार भगवान् को प्राप्त किया। और, किसी छोटे रूप में, भरत के अन्तिम ज्ञान का अभ्यास करें: एक ऐसी वस्तु जिस पर आपको गर्व है उसे आज थोड़ा और हलके भाव से धारण करें, यह स्मरण करते हुए कि समस्त प्रभुत्व एवं राजलक्ष्मी, अन्ततः, असत्य हैं, और कि एकमात्र स्थायी प्राप्ति स्वयं भगवान् हैं। अपने कार्य को पूजा एवं अपनी सफलता को समर्पण बनने दें, और आप, अपने माप में, उस महान् सम्राट् के मार्ग पर चलेंगे जिसका नाम यह भूमि आज भी धारण करती है।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का बीसवाँ अध्याय पूरु के वंश — स्वयं राजा परीक्षित का वंश — को दुष्मन्त तक ले जाता है, और दुष्मन्त एवं शकुन्तला की प्रिय कथा एवं उनके पुत्र भरत का जन्म देता है, जो श्री हरि के एक अंश से उत्पन्न हुए एवं इसी भूमि को अपना नाम देते हैं। यह भरत की चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में अद्वितीय महिमा, उन एक सौ तैंतीस यज्ञों की जिनके द्वारा उन्होंने माया को पार किया एवं भगवान् को प्राप्त किया, और उनकी अन्तिम निवृत्ति की बात कहता है जब उन्हें यह बोध हुआ कि उनका समस्त प्रभुत्व असत्य है; और यह मरुतों द्वारा उनके वंश को आगे बढ़ाने हेतु

ऋषि भरद्वाज के उपहार के साथ समाप्त होता है। इन सबके बीच भागवत की चिरस्थायी शिक्षा चमकती है — कि भगवान् को अर्पित महानता उन तक एक मार्ग बन जाती है, और कि सबसे शक्तिशाली राजा की भी सच्ची विजय संसार के पार एक सत्य को देखना एवं उसके प्रति समर्पण करना है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

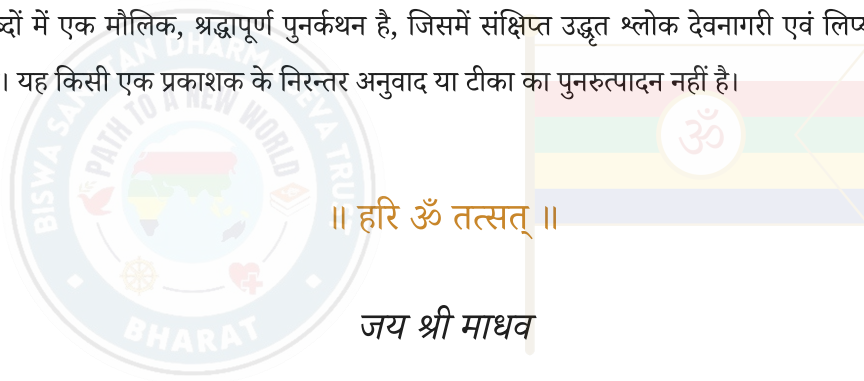
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, विंश अध्याय।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-20-dynasty-of-puru-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट